भारतीय संस्कृति की धरोहर
मल्लिका-ए-गजल बेगम अख्तर

बात 1974 की है, राजधानी दिल्ली में सर्दी का असर थोड़ी जल्दी महसूस होने लगा था। दिन छोटे और ठंडे हो चले थे। कनॉट प्लेस के नरूलाज होटल के बाहर मल्लिका-ए-गजल बेगम अख्तर के करीब दो दर्जन चाहने वाले उनका ऑटोग्राफ लेने के लिए इंतजार कर रहे थे। तारीख थी 15 अक्तूबर 1974। बेगम अख्तर राजधानी प्रवास के दौरान इधर ही ठहरती थीं। उन्हें उसी शाम को विज्ञान भवन में अपना कार्यक्रम पेश करना था। बेगम अख्तर विज्ञान भवन जाने से पहले अपने शैदाइयों से मिलीं। उनके विज्ञान भवन में पहुंचते ही वहां हलचल बढ़ गई, उनका सबको इंतजार था। कुछ लम्हों के बाद जब बेगम अख्तर मंच पर आईं, तो बेकरार श्रोता झूम उठे। लाल साड़ी में वो बेहद खूबसूरत लग रही थीं। उनके नाक में चमकती सोने की लौंग और उंगलियों में अंगूठियां दूर से दिखाई दे रही थीं। मुस्कुराते चेहरे के साथ वो मंच पर आईं और अपने चाहने वालों का स्वागत किया।

विवेक शुक्ला
नई दिल्ली

संगतकारों ने तबला-हारमोनियम बजाना शुरू किया, तो बेगम अख्तर ने सुदर्शन फाकिर की लिखी गजल 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' गाकर महफिल की शुरुआत की। उनके गाते ही विज्ञान भवन 'वाह-वाह' से गूंजने लगा। बेगम अख्तर ने पहली गजल खत्म करने के बाद श्रोताओं को सांस लेने का भी मौका भी नहीं दिया। फिर उन्होंने अमर गजल गानी शुरू कर दी- 'यूं तो हर शाम उम्मीदों में गुजर जाती है आज कुछ बात है, जो शाम पे रोना आया' बेगम अख्तर पूरे जोश में थीं। सूर साधक और संगीत के कार्यक्रम आयोजित करने वाले अमरजीत सिंह कोहली (स्मृति शेष) भी विज्ञान भवन में मौजूद थे। कोहली जी बताते थे, 'वो दिल्ली में बेगम अख्तर की यादगार महफिल थी। उनकी सुरीली आवाज ने सबको मदहोश कर दिया था।'

महिलाओं के लिए खोली नई राह

उनकी शुरुआती जिंदगी संघर्षपूर्ण रही। मां की मृत्यु के बाद, उन्होंने पटना में उस्ताद इमदाद खान से संगीत सीखा। बेगम अख्तर ने महिलाओं के लिए संगीत जगत में नई राह खोली। 1945 में शादी के बाद भी, उन्होंने मंच नहीं छोड़ा। पद्म भूषण और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुईं। उनकी गायकी में सूफी प्रभाव और लोक संगीत की मिठास है, जो आज भी प्रासंगिक है। वो अब हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनकी आवाज आज भी जीवंत है। बेगम अख्तर न केवल गायिका थीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। उनकी आवाज दर्द की भाषा बोलती है।

गायकी में झलकती थी प्रेम और जीवन की सच्चाई

विज्ञान भवन में रात के 10 बज चुके थे और बेगम अख्तर ने अपनी मशहूर गजल 'मेरे हमनफस मेरे हमनवा मुझे दोस्त बनके दगा न दे...' गाना शुरू किया। श्रोता सुरूर में आ चुके

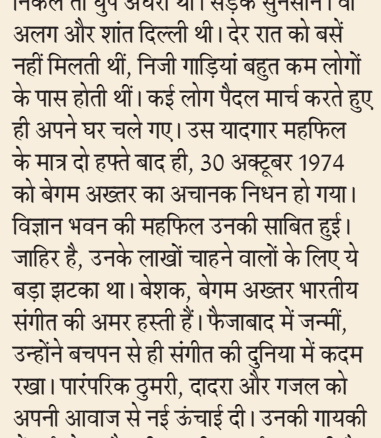

थे। सारा माहौल गजलमय हो चुका था। बेगम अख्तर गाते वक्त मंद-मंद मुस्कुरा भी रही थीं। इस गजल को उन्होंने करीब 40 मिनट तक गाया। इसके बाद उन्होंने कुछ देर तक विश्राम किया, लेकिन कोई अपनी सीट से हिलने को तैयार नहीं था। सब गजल की महफिल में डूबे हुए थे। इसके बाद उनके चाहने वाले गुजारिश करने लगे कि वो 'ये न थी हमारी किस्मत कि विसाल-ए-यार होता, अगर और जीते रहते ...' गजल अवश्य सुनाएं। उन्होंने श्रोताओं की मांग को सहर्ष माना। उस महफिल का आखिरी नगीना थीं- 'ये न थी हमारी किस्मत कि विसाल-ए-यार होता...।' बेगम अख्तर और उनकी सोने सी आवाज के दीवाने तृप्त हो चुके थे। आखिरी गजल गाते हुए वो पूरी तरह छाई हुई थीं। इस गजल ने उनके शैदाइयों को पागल कर दिया था। महफिल रात 12 बजे के आसपास खत्म हुई। बेगम अख्तर की परफॉर्मेंस से संतुष्ट श्रोता, जब विज्ञान भवन से बाहर निकले तो घुप अंधेरा था। सड़कें सुनसान। वो अलग और शांत दिल्ली थी। देर रात को बसें नहीं मिलती थीं, निजी गाड़ियां बहुत कम लोगों के पास होती थीं। कई लोग पैदल मार्च करते हुए ही अपने घर चले गए। उस यादगार महफिल के मात्र दो हफ्ते बाद ही, 30 अक्टूबर 1974 को बेगम अख्तर का अचानक निधन हो गया। विज्ञान भवन की महफिल उनकी साबित हुई। जाहिर है, उनके लाखों चाहने वालों के लिए ये बड़ा झटका था। बेशक, बेगम अख्तर भारतीय संगीत की अमर हस्ती हैं। फैजाबाद में जन्मीं, उन्होंने बचपन से ही संगीत की दुनिया में कदम रखा। पारंपरिक ठुमरी, दादरा और गजल को अपनी आवाज से नई ऊंचाई दी। उनकी गायकी में दर्द, प्रेम और जीवन की गहराई झलकती है, जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है।

रेगिस्तान की रेत पर
रंगों का मेला

राजस्थान में अजमेर से लगभग 11 किमी दूर प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर है। यहां पर कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं। मेले में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है, जो इस मेले की शोभा को और बढ़ा देते हैं। मेलों के रंग राजस्थान में देखते ही बनते हैं। ये मेले मरुस्थल के गांवों के कठोर जीवन में एक नवीन उत्साह भर देते हैं। लोग रंग-बिरंगे परिधानों में सज-धजकर जगह-जगह पर नृत्य-गान आदि समारोहों में भाग लेते हैं। यहां पर काफी मात्रा में भीड़ देखने को मिलती है। लोग इस मेले को श्रद्धा, आस्था और विश्वास का प्रतीक मानते हैं। पुष्कर मेला थार मरुस्थल का एक लोकप्रिय व रंगों से भरा मेला है। पुष्कर झील भारतवर्ष में पवित्रतम स्थानों में से एक है। प्राचीनकाल से लोग यहां पर प्रतिवर्ष कार्तिक मास में एकत्रित हो, भगवान ब्रह्मा की पूजा उपासना करते हैं। पुष्कर मेले को खास माना जाता है, क्योंकि यह धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक महत्व का एक अनूठा संगम है। पुष्कर मेले की मुख्य विशेषताओं में दुनिया का सबसे बड़ा ऊंट और पशुधन मेला होना, जिसमें ऊंट, घोड़े और अन्य मवेशियों की खरीद-बिक्री होती है।

रमेश सर्राफ
धमोरा

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों का मिश्रण शामिल है। इसमें सांस्कृतिक प्रदर्शन, पारंपरिक खेल जैसे कुश्ती और कबड्डी तथा ऊंट व घोड़ों के लिए सजगता प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इसके अलावा मेले में हस्तशिल्प बाजार और पवित्र पुष्कर झील के किनारे धार्मिक अनुष्ठान भी होते हैं, जो इसे एक बहुआयामी उत्सव बनाते हैं। पुष्कर मेले की मुख्य विशेषताओं में दुनिया का सबसे बड़ा ऊंट और पशुधन मेला होना, जिसमें ऊंट, घोड़े और अन्य मवेशियों की खरीद-बिक्री होती है। धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों का मिश्रण शामिल है। इसमें सांस्कृतिक प्रदर्शन, पारंपरिक खेल जैसे- कुश्ती और कबड्डी तथा ऊंट व घोड़ों के लिए सजगता प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस साल संपन्न हुए मेले में काफी संख्या में पशुपालक अपने पशु लेकर आए थे, जिनकी संख्या में भी बड़ी खरीद बिक्री हुई। इस बार पशु मेले में ऊंटों के बजाय घोड़ों की संख्या अधिक थी। ऊंटों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है। मेले में विदेशी पर्यटकों की भी संख्या पहले से दोगुनी रही है। इस बार मेले में करीबन पांच हजार से अधिक विदेशी पर्यटक शामिल हुए थे। मेले के प्रारंभ में पुष्कर के 52 घाटों पर सवा लाख दीप जलाकर पूरे पुष्कर शहर को दीपों की रोशनी से जगमगा दिया गया था।

पर्यटन विभाग की ओर से क्रिकेट मैच, साफा बांधों और तिलक कॉम्पिटीशन के साथ ही मूंछ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। क्रिकेट मैच देसी और विदेशी टीमों के बीच खेला गया, जिसमें भारत की जीत हुई। वहीं मूंछ कॉम्पिटीशन में 80 इंच की मूंछों वाला एक रेलवे कर्मचारी भी आया, जिसने अपनी मूंछों से प्रतियोगिता में तीर-बाण चलाए। मूंछ कॉम्पिटीशन में कई प्रतिभागी लाखों की ज्वेलरी पहनकर आए। मूंछ कॉम्पिटिशन में 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया। राजस्थान और अन्य राज्यों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। इनमें मारवाड़ और मेवाड़ के ज्यादा पार्टिसिपेंट्स शामिल हुए थे। इनमें बैंक और रेलवे नर्सिंग कर्मचारी, ऑफिसर पीटीआई टीचर सहित अन्य लोगों ने अपनी मूंछों का प्रदर्शन किया।

अजमेर के पुष्कर मेला मैदान में बीकानेर से एक पशुपालक 800 किलो का मुर्रा नस्ल का भैंसा लेकर रेतीले धोरों में पहुंचा। इसकी कीमत करीब 10 लाख रुपए है। केकड़ी के अश्वपालक राहुल जेतवाल अपने 17 सफेद रंग के घोड़े-घोड़ियों के साथ मेले में पहुंचे हैं, जिनमें सबसे खास है 5 साल का घोड़ा बादल। यह लगातार तीसरी बार पुष्कर मेले में आया है। राहुल ने बताया कि बादल ने अब तक 285 बच्चों का बाप बन चुका है। फिलहाल उसकी 120 घोड़ियां गर्भवती हैं। नुगरा नस्ल के इस घोड़े की ऊंचाई अब 68 इंच से भी अधिक हो चुकी है। वे इसे बेचने नहीं, बल्कि सिर्फ प्रदर्शन के लिए लाए हैं, लेकिन व्यापारी इसे खरीदने के लिए 11 करोड़ देने को तैयार हैं। इसके अलावा मेले में हस्तशिल्प बाजार और पवित्र पुष्कर झील के किनारे धार्मिक अनुष्ठान भी होते हैं, जो इसे बहुआयामी उत्सव बनाते हैं।

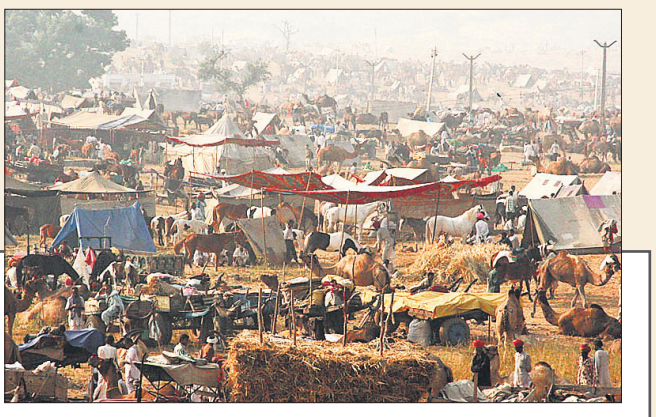

महाभारत में भी है पुष्कर का उल्लेख

महाभारत में पुष्कर राज के बारे में लिखा है कि तीनों लोकों में मृत्यु लोक महान है और मृत्यु लोक में देवताओं का सर्वाधिक प्रिय स्थान पुष्कर है। चारों धामों की यात्रा करके भी यदि कोई व्यक्ति पुष्कर सरोवर में डुबकी नहीं लगाता है, तो उसके सारे पुण्य निष्फल हो जाते हैं। यही कारण है कि तीर्थ यात्री चारों धामों की यात्रा के बाद पुष्कर की यात्रा जरूर करते हैं। तीर्थराज पुष्कर को पृथ्वी का तीसरा नेत्र भी माना जाता है। पुष्कर नगरी में विश्व का एकमात्र ब्रह्मा मंदिर है, तो दूसरी तरफ दक्षिण स्थापत्य शैली पर आधारित रामानुज संप्रदाय का विशाल बैकुंठ मंदिर। इनके अलावा सावित्री मंदिर, वराह मंदिर के अलावा अन्य कई मंदिर हैं। पास में ही एक छोटे से मंदिर में नारद जी की मूर्ति। एक मंदिर में हाथी पर बैठे कुबेर तथा नारद की मूर्तियां हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लिखित है कि अपने मानस पुत्र नारद द्वारा सृष्टिकर्म करने से इंकार किए जाने पर ब्रह्मा ने उन्हें शाप दे दिया

कि तुमने मेरी आज्ञा की अवहेलना की है। अतः मेरे शाप से तुम्हारा ज्ञान नष्ट हो जाएगा और तुम गंधर्व योनि को प्राप्त करके कामिनियों के वशीभूत हो जाओगे। तब नारद ने भी दुःखी पिता ब्रह्मा को शाप दिया कि आपने बिना किसी कारण मुझे शाप दिया है। अतः मैं भी आपको शाप देता हूं कि तीन लोक में आपकी पूजा नहीं होगी और आपके मंत्र, श्लोक कवच आदि का लोप हो जाएगा। तभी से ब्रह्मा जी की पूजा नहीं होती है। मात्र पुष्कर क्षेत्र में ही वर्ष में एक बार उनकी पूजा-अर्चना होती है।

कई आस्थावान लोग पुष्कर परिक्रमा भी करते हैं। सुबह और शाम के समय यहां आरती होती है। वह दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है। इतनी विशेषताओं के कारण पुष्कर को तीर्थराज कहने के अलावा देश का पांचवां धाम भी कहा जाता है। पुष्कर सरोवर में कार्तिक पूर्णिमा पर पर्व स्नान का बड़ा महत्व माना गया है, क्योंकि कार्तिक पूर्णिमा पर ही ब्रह्मा जी का वैदिक यज्ञ संपन्न हुआ था। तब यहां संपूर्ण देवी-देवता एकत्र हुए थे। उस पावन अवसर पर पर्व स्नान की परंपरा सदियों से चली आ रही है। जिस प्रकार प्रयाग को तीर्थराज कहा जाता है, उसी प्रकार से इस तीर्थ को पुष्करराज कहा जाता है।